राजस्थान पत्रिका
SATURDAY
बेंगलूरु, शनिवार, 21 मई 2011
पृष्ठ : 18, मूल्य: ₹3.50
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष चतुर्थी, संवत् 2068
पत्रिका समूह नेटवर्क, 7 राज्य, 28 संस्करण

2

भोजन मुहैया कराने का अभियान

बच्चों, बुजुर्गों व विधवाओं की मदद का अभियान

कैदियों का पुनर्वास, विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति

कार्यालय संवाददाता @ बेंगलूरु

बच्चों के चेहरे पर छलकती खुशी।

भोजन बांटने की तैयारी। (फाइल फोटो)

पेट खाली हो तो देश के विकास की सारी योजनाएं धरी रह जाएंगी। न तो बच्चे स्कूल जाकर पढ़ाई करना चाहेंगे और न ही बुजुर्ग कुछ दिन और जीकर समाज में योगदान दे पाएंगे। समाज के जरूरतमंद बच्चों, बुजुर्गों तथा विधवाओं की मदद के लिए शहर के एक व्यापारी मोसिन शरीफ ने एक ट्रस्ट चला रखा है जिसका उद्देश्य भूख को मिटाना है। वर्ष 2002 में शुरू किए गए मोसिन शरीफ एजुकेशनल एंड चैरिटेबल ट्रस्ट (एमसेक्ट) के बैनर तले वे 10 हजार बुजुर्गों तथा 50 हजार स्कूलों बच्चों का पेट भर रहे हैं। जल्द ही वे विधवाओं को भी इस योजना में शामिल करने जा रहे हैं।

दूरगामी लक्ष्य

शरीफ बताते हैं कि उनका लक्ष्य करीब 1 लाख जरूरतमंद बुजुर्गों तक भोजन पहुंचकर उनका पेट भरना है। इसमें 10 हजार नेत्रहीन तथा इतने ही अपंग वृद्ध शामिल होंगे। इसके लिए शहर के सभी 200 से भी अधिक वार्ड पार्षदों को उनके इलाके में 500 जरुरतमंद बुजुर्गों की पहचान का काम उन्होंने सौंपा है। इस योजना पर करीब 28 करोड़ रुपए का खर्च आने वाला है जिसका वहन वे अपने व्यापार के मुनाफे तथा दाताओं की मदद से करेंगे।

बेसहारा विधवाओं का पेट भरने के लिए भी ट्रस्ट उनके लिए भोजन मुहैया कराने की योजना बना रहा है। शरीफ ने बताया कि इसके लिए विचार-विमर्श चल रहा है और जल्द ही इसे अमली जामा पहना दिया जाएगा। करीब 10 वर्षों से ट्रस्ट की ओर से 182 कन्नड़, उर्दू, तमिल, तेलुगू तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में पढ़ने वाले 50 हजार से भी अधिक बच्चों को मध्याह्न भोजन दिया जा रहा है।

भेदभाव बिना...

राज्य तथा केन्द्र सरकार की ओर से मिलने वाली मदद से ट्रस्ट अधिकाधिक बच्चों को भोजन मुहैया करा पाने में सफल रहा है। इसका उद्देश्य सरकारी तथा सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों में पढ़ रहे पहली से दसवीं कक्षा तक के करीब 2 लाख बच्चों को जाति, धर्म या भाषा के भेदभाव के बिना मध्याह्न भोजन उपलब्ध कराना है। ट्रस्ट के जनसंपर्क अधिकारी जमाल मोहम्मद बताते हैं कि रोजाना भोजन की सामग्रियां बदलती हैं। इसमें बिसीबेले भात, चितरन्ना, अन्ना सांभर आदि शामिल हैं।

शुद्ध व स्वादिष्ट भोजन

शरीफ का काम कृष्णराजपुरम स्थित रसोई में सुबह 4 बजे ही आरंभ हो जाता है। इसमें 100 से भी अधिक कर्मचारी काम करते हैं। खाने की शुद्धता तथा स्वाद सुनिश्चित करने के लिए नई तकनीकों का प्रयोग किया जाता है। करीब साढ़े 9 बजे तक भोजन तैयार कर विद्यालयों में भेज दिया जाता है। एक सरकारी कन्नड़ प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक बताते हैं कि शरीफ ट्रस्ट की ओर से भोजन मुहैया कराए जाने के बाद स्कूल में दाखिला लेने वाले बच्चों की तादाद बढ़ गई है। बच्चे इससे बेहद खुश हैं। साथ ही बीच में पढ़ाई छोड़ने वाले बच्चों की संख्या भी घट गई है।

पीने का पानी भी

गत अगस्त से ट्रस्ट ने स्कूली बच्चों को पैक किया हुआ पीने का शुद्ध पानी भी देना शुरू कर दिया है। शरीफ बताते हैं कि बनेरघट्टा में जल शुद्धीकरण का उनका एक प्लांट है। वर्तमान में वे 50 हजार बच्चों की प्यास बुझा रहे हैं। उनकी योजना इसका विस्तार कर समाज के अन्य वर्गों तक भी पीने का पानी पहुंचाने की है।

कैदियों व विद्यार्थियों की मदद

जेल में बंद कैदियों के लिए कई अवसरों पर वे विशेष भोजन भेजते हैं। जेल से छूटे कैदियों के पुनर्वास के लिए भी कार्यक्रम चलाया जा रहा है। पढ़ाई में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे विद्यार्थियों के लिए छात्रवृत्ति का प्रबंध किया गया है। जाड़े के दिनों में वे बुजुर्गों को कंबल तथा गर्म कपड़े देते हैं। शरीफ बताते हैं कि यह सब करके उनके मन को तसल्ली मिलती है और आगे बढ़ने की प्रेरणा भी। इसके लिए पैसों का इंतजाम उनके व्यापार से होने वाली कमाई से होता है। कुछ दानदाताओं से भी आर्थिक मदद मिल जाती है। डीजे हल्ली स्लम में रहने वाले 10 हजार बच्चों को रोजाना भोजन कराने के लिए शरीफ अपने पॉकेट से पैसे खर्च करते हैं।

स्वास्थ्य सुविधाएं

ट्रस्ट की योजना गरीब बच्चों तक स्वास्थ्य सुविधाएं पहुंचाने की भी है। वे बच्चों को निःशुल्क हेपेटाइटिस-बी का टीका देना चाहते हैं। शरीफ बताते हैं कि इसके लिए केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय को एक ज्ञापन भी उन्होंने सौंपा है। जल्द ही मध्याह्न भोजन योजना का देवनहल्ली तथा दोद्बल्लापुर के स्कूलों तक विस्तार किया जाएगा।

शरीफ बताते हैं कि मंदिर, मस्जिद, गिरिजाघर, आश्रम,स्कूल तथा वार्ड आदि के माध्यम से वे भोजन बांटने की योजना चला रहे हैं। उनकी कोशिश है कि उनके अभियान के माध्यम से अधिकाधिक लोगों को लाभ मिल सके।